

आवश्यक जानकारी

नत्रजन : उर्वरक की आधी मात्रा बोआई के समय दें एवं शेष आधी मात्रा का छिड़काव फसल के अनुसार एक/दो या तीन बार में करें।

उदाहरणार्थ :

धान : सीधी बोआई - 50% बोआई के पहले + 25% 30 दिनों के बाद + 25% 40 दिनों के बाद

रोपनी विधि - 50% रोपनी के पहले + 25% 2-3 सप्ताह बाद + 25% छः सप्ताह बाद।

गेहूँ : 50% बोआई के समय + 50% प्रथम सिंचाई (20-25 दिन के बाद)

मक्का : 30% बोआई के समय + 40% 30 दिनों के बाद + 30% धनबाल निकलने के समय।

- अनुशंसित स्फूर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बोआई के समय दें।
- चूने की अनुशंसित मात्रा महीन चूर्ण के रूप में बोआई के समय कतारों में डालकर मिला लें, उसके बाद उर्वरकों का प्रयोग एवं बीज की बोआई करें।
- दलहनी फसलों में रॉक फास्फेट का व्यवहार किया जा सकता है।
- अरहर, सोयाबीन, मूँगफली, चना, मसूर, मटर, बरसीम जैसी फसलों के बीज को राइजोबियम जीवाणु खाद से उपचारित कर ही लगाएँ।
- अनुशंसित उन्नत एवं अधिक उपज देने वाली बीजों का ही व्यवहार करें। अधिक जानकारी के लिए स्थानीय कृषि पदाधिकारी से सम्पर्क करें।
- निचली जमीन दोन 1 एवं 2 में लगने वाले धान में नील हरित शैवाल का उपयोग करें।
- कल्चर/रॉक फॉस्फेट डालकर कम्पोस्ट बनाने की उन्नत विधि अपनाएँ। कम्पोस्ट की अनुशंसित मात्रा खेत तैयार करते समय मिट्टी में डालकर अच्छी तरह मिला दें।

- एक किलोग्राम नत्रजन = 2 किलो 200 ग्राम युरिया
- एक किलोग्राम फॉस्फेट = 6 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट
- एक किलोग्राम पोटाश = 1 किलो 650 ग्राम म्युरियेट ऑफ पोटाश

विशेष हिदायतें

अम्लीय भूमि (pH) :- अम्लीय भूमि (पी.एच. मान 6.5 से कम) का सीधा सम्बन्ध मिट्टी की गुणवत्ता से होता है। झारखण्ड राज्य में अधिकतर अम्लीय भूमि की जमीने ही होती है। यदि पी0एच0 मान 6.5 से नीचे हो तो उसमें बुझा चूना/डोलोमाईट/बेसिक स्लैग का प्रयोग दर्शाई गई मात्रा में अवश्य करें।

नाइट्रोजन, फासफोरस, पोटास व सल्फर (N, P, K, S) : इन सभी खादों की सन्तुलित मात्रा की सिफारिश की गई है। यदि इनमें किसी भी तत्व की दर्शाई गई मात्रा का प्रयोग नहीं किया गया तो आपकी फसल की उत्पादकता 25-80% तक कम हो सकती है। अतः इन सभी खादों का प्रयोग दर्शाई गई मात्रा के हिसाब से अवश्य करें।

नोट: अतिरिक्त जानकारी के लिये निकटतम कृषि पदाधिकारी/निकटतम मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला/कृषि विज्ञान केन्द्र/आत्मा से सम्पर्क करें।

कृषि एवं गन्ना विकास विभाग झारखण्ड सरकार



मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड

किसान का नाम :

पूरा पता : ग्राम

पोस्ट

पंचायत

प्रखण्ड

जिला

पिन कोड

प्लॉट न० :

भूमि की किस्म : ऊपरी/मध्यम/नीची

सिंचित/ वर्षा आधारित

फसल चक्र : खरीफ

रबी

गरमा

नमूना सं० एवं दिनांक: :

प्रयोगशाला का नाम :

कृषि निदेशालय,

कृषि भवन, काँके रोड, राँची, झारखण्ड

E-mail: directoragriculture@gmail.com

दूरभाष/फैक्स: 0651 2233549

मिट्टी जाँच का प्रतिवेदन		
मिट्टी का गुण	मान	पोषक तत्वों की उपलब्धता
पी.एच.		अम्लीय/उदासीन/क्षारीय
जैविक कार्बन (प्रतिशत)		अल्प/मध्यम/उच्च
उपलब्ध नत्रजन (कि.ग्रा./हे.)		अल्प/मध्यम/उच्च
उपलब्ध स्फूर (कि.ग्रा./हे.)		अल्प/मध्यम/उच्च
उपलब्ध पोटश (कि.ग्रा./हे.)		अल्प/मध्यम/उच्च
परीक्षण किये गये मिट्टी के स्थिति का आंकलन आधार		
पी.एच.	6.5 से नीचे 5.5 से नीचे	अम्लीय अम्लीय समस्याग्रस्त
जैविक कार्बन (प्रतिशत)	0.5 से नीचे 0.5 से 0.75 0.75 से अधिक	अल्प मध्यम उच्च
उपलब्ध नत्रजन (कि.ग्रा./हे.)	250 से नीचे 250 से 500 500 से अधिक	अल्प मध्यम उच्च
उपलब्ध स्फूर (कि.ग्रा./हे.)	10 से नीचे 10 से 20 20 से अधिक	अल्प मध्यम उच्च
उपलब्ध पोटश (कि.ग्रा./हे.)	125 से नीचे 125 से 300 300 से अधिक	अल्प मध्यम उच्च

खाद एवं उर्वरक की सिफारिश						
क्र.	फसल का नाम	यूरिया कि०ग्रा०/ एकड़	फास्फोरस कि०ग्रा०/ एकड़		पोटश (एम. ओ.पी.) कि०ग्रा०/ एकड़	सल्फर (जिपसम) कि०ग्रा०/ एकड़
			एस.एस. पी.	डॉ०ए ०पी)		
1.						
2.						
3.						
4.						
5.						

पी.एच. मान के अनुसार अनुशंसा:

चूना प्रति एकड़ या
डोलोमाईट प्रति एकड़ या
बेसिक स्लैग प्रति एकड़

तकनीकी सहायक का हस्ताक्षर

मिट्टी परीक्षण पदाधिकारी का हस्ताक्षर